IJMRSETM

e-ISSN: 2395 - 7639

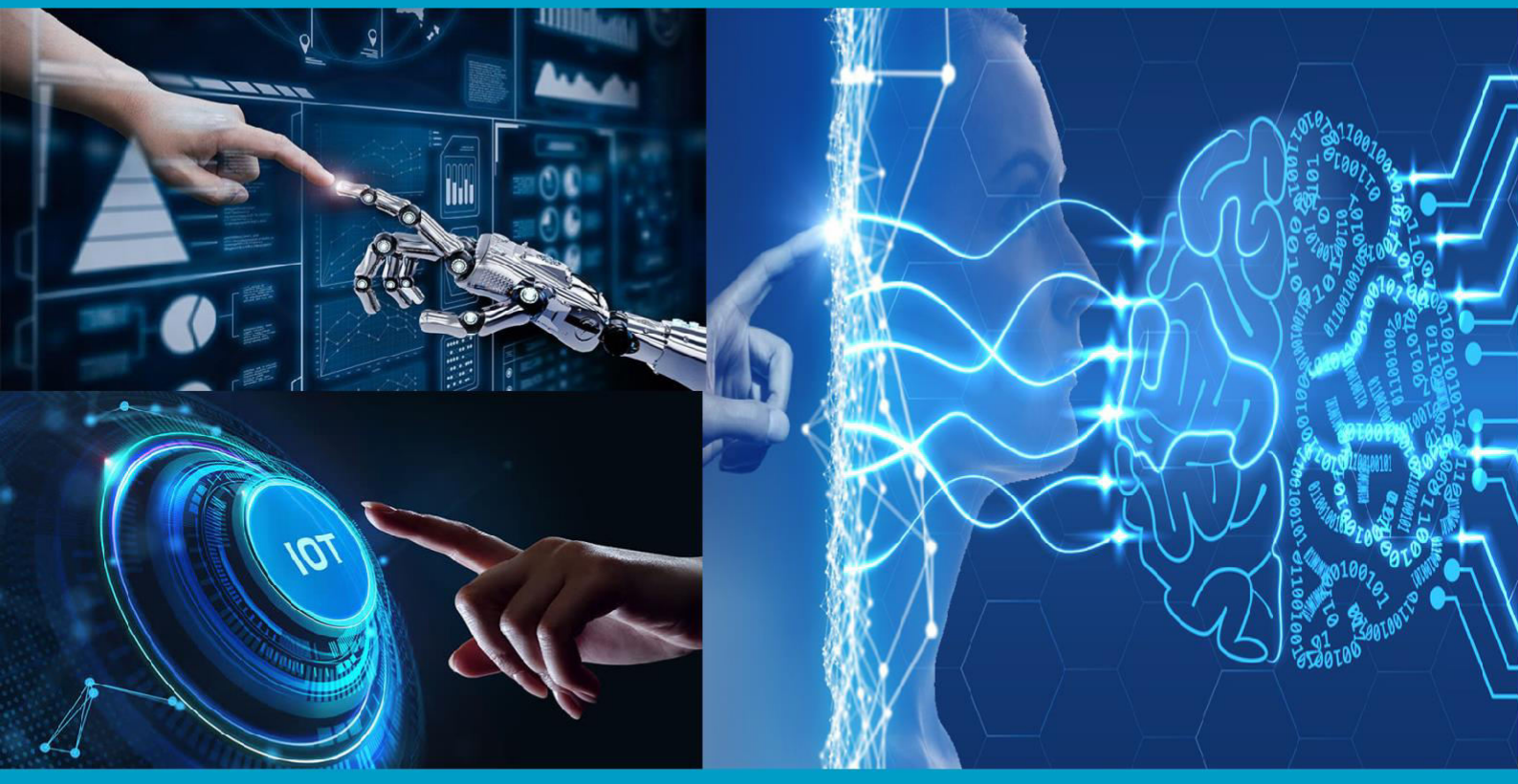

INTERNATIONAL JOURNAL OF MULTIDISCIPLINARY RESEARCH

IN SCIENCE, ENGINEERING, TECHNOLOGY AND MANAGEMENT

Volume 9, Issue 7, July 2022

INTERNATIONAL STANDARD SERIAL NUMBER INDIA

Impact Factor: 7.580

International Journal of Multidisciplinary Research in Science, Engineering, Technology & Management (IJMRSETM)

| ISSN: 2395-7639 | www.ijmrsetm.com | Impact Factor: 7.580| A Monthly Double-Blind Peer Reviewed Journal |

| Volume 9, Issue 7, July 2022 |

राजस्थान की बंधेज का विभिन्न रेशो पर प्राकट्य का अध्ययन

DHANWANTI BISHNOI

ASSOCIATE PROFESSOR, DEPARTMENT OF GPEM, GOVT. M.S. COLLEGE FOR WOMEN, BIKANER, RAJASTHAN, INDIA

सार

दुनिया की सबसे पुरानी जीवित टाई और डाई परंपराओं के एक हिस्से के रूप में प्रसिद्ध, बंधेज और लहरिया कपड़ों के हिस्सों को अलग-अलग तरीकों से बांधकर पैटर्न बनाने की तकनीक हैं, जो रंगों के प्रवेश को रोकते हैं। समय के साथ, जयपुर, जोधपुर और उदयपुर जैसे शहर ऐसे कपड़ों की वस्तुओं, विशेषकर साड़ियों की बिक्री के लिए प्रमुख वाणिज्यिक केंद्र बन गए हैं, जो इस तरह से रंगे जाते हैं। आइए इन राजस्थानी शिल्प रूपों की शुरुआत और तकनीक पर एक नज़र डालें जो अपने जीवंत रंगों और शैलीगत पैटर्न के लिए पूरे भारत में प्रसिद्ध हैं।

परिचय

बंधनी (जिसे बंधेज भी कहा जाता है) की व्युत्पत्ति हिंदी शब्द बंधन से हुई है , जिसका अर्थ है बंधन। बंधेज मुख्य रूप से पश्चिमी भारत में प्रचलित एक प्राचीन कला है, जो एक कपड़े पर एक सतत धागे के साथ छोटे बिंदु बांधने और उसे रंगने की कला है। दिलचस्प बात यह है कि इसके लिए कारीगरों के लंबे नाखूनों की आवश्यकता होती है ताकि कपड़े को अधिकतम सटीकता के साथ बांधा और रंगा जा सके।

शुरुआत में 17वीं शताब्दी के आसपास जयपुर में विकसित, लेहरिया एक ऐसी तकनीक है जहां प्रतिरोधी रंगाई के माध्यम से कपड़े पर विकर्ण पैटर्न बनाए जाते हैं। ऐसा कहा जाता है कि ये लहरदार पैटर्न थार रेगिस्तान के रेत के टीलों से प्रेरित हैं । कुछ लोगों का यह भी कहना है कि राजस्थान के प्रत्येक शाही घराने का एक विशिष्ट लेहरिया पैटर्न और रंग होता था जिसे केवल संबंधित घराना ही सजा सकता था।[1,2]

जबकि बंधेज और लेहरिया राजस्थान के सबसे प्रसिद्ध टाई और डाई प्रिंट हैं, प्रतिरोधी रंगाई की तकनीक विभिन्न प्रकार के पैटर्न तैयार कर सकती है। इसलिए, कपड़ों पर अलग-अलग रूपांकन उपलब्ध हैं जैसे एकडाली और शिकारी। मोथरा को लेहरिया का विस्तार माना जाता है और इसमें विकर्ण रेखाएं एक-दूसरे को विपरीत दिशाओं में काटती हैं, जिससे हीरे के आकार की संरचनाएं बनती हैं।

| ISSN: 2395-7639 | www.ijmrsetm.com | Impact Factor: 7.580| A Monthly Double-Blind Peer Reviewed Journal |

| Volume 9, Issue 7, July 2022 |

पैटर्न वाले कपड़े बनाने के लिए इस्तेमाल की जाने वाली एक टाई-डाईंग तकनीक, बंधनी की कई विविधताएं अंधेरी जमीन पर हल्के गोलाकार या चौकोर आकार के दोहराव वाले रूपांकनों से पहचानी जाती हैं। इसका नाम संस्कृत शब्द बांध से लिया गया है , जिसका अर्थ है "बांधना", और आमतौर पर इसका उपयोग बिना सिले पोशाक जैसे ओढ़नी और साड़ी बनाने के लिए किया जाता है। डिज़ाइन आधार कपड़े के आधार पर भिन्न होता है - आमतौर पर सादा-बुनाई कपास, लेकिन रेशम, मलमल , क्रेप , जॉर्जेट , शिफॉन या वॉयल - और क्षेत्रीय प्राथमिकताओं और प्रभावों पर भी। बंधनी कपड़ा उत्पादन के प्रमुख केंद्रों में गुजरात में मांडवी, भुज, जामनगर, पोरबंदर और राजकोट और राजस्थान में उदयपुर, जयपुर, अजमेर और बीकानेर शामिल हैं।

टाई-डाईंग तकनीक का अभ्यास पूरी दुनिया में स्वतंत्र रूप से किया जाता रहा है, सबसे पहले ज्ञात उदाहरण पेरू में 500 और 810 ईस्वी के बीच के हैं। विद्वानों का मानना है कि दक्षिण एशिया में बंधनी का पहला प्रमाण छठी शताब्दी की गुफा पेंटिंग में देखा जा सकता है जिसमें अजंता के भित्तिचित्रों में बुद्ध के जीवन को दर्शाया गया है । पंद्रहवीं शताब्दी की जैन पांडुलिपि उत्तराध्ययनसूत्र के एक चित्रण में एक भिक्षु को पारदर्शी सफेद वस्त्र पहने हुए दिखाया गया है जो समान गोलाकार टाई-डाई पैटर्न से सजाया गया है। पंद्रहवीं से सोलहवीं शताब्दी के मुद्रित कपड़े के टुकड़ों के साक्ष्य, जो मिस्र में पाए गए और गुजरात में पाए गए, भारत में अच्छी तरह से स्थापित और परस्पर जुड़े ब्लॉक प्रिंटिंग और प्रतिरोधी-रंगाई परंपराओं का सुझाव देते हैं।

एक तकनीक के रूप में, बंधनी पूरे दक्षिण एशिया में काफी हद तक सुसंगत है। सबसे पहले कपड़े की सीमा और बॉडी बनाई जाती है, जिसके बाद बॉडी पर दिखाई देने वाले पैटर्न तैयार किए जाते हैं। फिर कपड़े को मोड़ दिया जाता है, जिससे पैटर्न को प्रतिबिंबित किया जा सकता है और कपड़े के सभी हिस्सों में दोहराया जा सकता है। फिर डिज़ाइन को गेरू से लेपित विशेष नक्काशीदार लकड़ी के ब्लॉक का उपयोग करके कपड़े के एक पहलू पर मुद्रित किया जाता है । जबकि ब्लॉक पारंपरिक मुद्रण उपकरण हैं, अधिकांश रंगरेज आज प्लास्टिक फार्मा पेपर से बने स्टेंसिल के साथ गेरू का उपयोग करते हैं। मुद्रित पैटर्न के अनुसार, कपड़े के छोटे-छोटे हिस्सों को हाथ से दबाया जाता है, या धातु की अंगूठी से उठाया जाता है, और एक मजबूत धागे से बांधा जाता है - पारंपरिक रूप से महिलाएं जिन्हें बंधनरा के नाम से जाना जाता है । फिर पूरे कपड़े को कई मिनट तक उबलते रंग में डुबोया जाता है, धोया जाता है और धूप में सूखने के लिए छोड़ दिया जाता है। बंधे हुए हिस्सों में थोड़ी मात्रा में डाई निकल जाती है जबकि आस-पास के कपड़े में गाढ़ी डाई रह जाती है। एक बार जब धागे खुल जाते हैं, तो हल्के बिना रंगे छल्लों से घिरे रंग के छोटे-छोटे बिंदु सामने आ जाते हैं। सबसे हल्के शेड से शुरू करके, पैटर्न में शामिल प्रत्येक रंग के लिए इस प्रक्रिया को कई बार दोहराया जा सकता है। अंततः, पैटर्न उन छोटे वृत्तों से बनते हैं जहाँ कपड़ा बाँधा गया था।

पारंपरिक बंधनी डिज़ाइनों को इस तकनीक के निष्पादन के आधार पर महत्व दिया जाता है - कई छोटे और निकट दूरी वाले बिंदुओं वाले पैटर्न को कम, व्यापक रूप से दूरी वाले या अनियमित बिंदुओं वाले पैटर्न को प्राथमिकता दी जाती है। यह कपड़े को रंगने के कौशल और कपड़े की गुणवत्ता दोनों का परिणाम है। रेशम या मलमल जैसी सामग्रियां, जो हल्की होती हैं और अधिक वांछनीय बुनाई होती हैं, सटीक रूप से बांधने और रंगाई करने में बेहतर योगदान देती हैं।[3,4]

बंधनी तकनीक मूल रूप से सिंध में खत्री समुदाय द्वारा प्रचलित थी और बाद में इसने गुजरात, राजस्थान और मध्य प्रदेश के कारीगरों के बीच लोकप्रियता हासिल की।

इन सभी क्षेत्रों में, बंधनी कपड़े रोजमर्रा के उपयोग के साथ-साथ विशेष समारोहों और अनुष्ठानों के लिए भी बनाए जाते हैं। सुंगदी , तमिलनाडु में पाई जाने वाली बंधनी की एक समान विविधता है, जिसका अभ्यास सौराष्ट्रियन कारीगरों द्वारा किया जाता है जो स्थानीय शासक के आदेश पर सत्रहवीं शताब्दी में मदुरै चले गए थे।

आधार कपड़े की सामग्री, समग्र संरचना, रूपांकनों और पैटर्न सभी उस क्षेत्र और अवसर के आधार पर प्रतीकात्मक मूल्य रखते हैं जिस पर बंधनी कपड़े पहने जाते हैं। उदाहरण के लिए, रबारी समुदाय के सदस्य ऊनी, कढ़ाई वाली बंधनी ओढ़नी पहनते हैं, जबकि गुजराती दुल्हनें रेशम घरचोलू ओढ़नी पहनती हैं और खत्री दुल्हनें सीमा पर ज़री के काम के साथ रेशम की खोम्बी घूंघट पहनती हैं। गुजरात के अन्य पारंपरिक बंधनी डिज़ाइनों में बावनबाग और रसमंडली शामिल हैं , जिनमें आम के पेड़, मोर और हाथी जैसे रूपांकन भी प्रचलित हैं।

जबकि गुजराती डिज़ाइनों में आमतौर पर दोहराए जाने वाले रूपांकन होते हैं, राजस्थान के बंधनी कपड़ों में आमतौर पर गाढ़ा, बहुरंगी वृत्त और बड़े बिंदु होते हैं जिन्हें डब्बी कहा जाता है । प्रारंभ में राजघराने के लिए उत्पादन किया जाता था, केसर जैसी महंगी सामग्री और मौसम और अवसरों के साथ अलग-अलग रंग पैलेट का उपयोग करके, उन्हें स्थानीय समुदायों द्वारा उपयोग के लिए उत्पादित किया जाने लगा, जिसमें रंग समुदाय, सामाजिक स्थिति, व्यवसाय और वैवाहिक जीवन के सामाजिक निर्धारक के

| ISSN: 2395-7639 | www.ijmrsetm.com | Impact Factor: 7.580| A Monthly Double-Blind Peer Reviewed Journal |

| Volume 9, Issue 7, July 2022 |

रूप में खड़े थे। इसे पहनने वाले व्यक्ति की स्थिति. राजस्थानी पुरुषों के कपड़े के हेडगियर या स आफ़ा के लिए व्यापक रूप से उपयोग किया जाता है , टाई-डाई बहुरंगी बंधनी, साथ ही लेहरिया , पगड़ी समुदाय के बुजुर्गों या सम्मानित सदस्यों के लिए आरक्षित हैं, जबकि ब्लॉक-मुद्रित नकल होने की अधिक संभावना है युवा पीढ़ी द्वारा उपयोग किया जाता है। बिश्नोई महिलाएं आम तौर पर काले गोलाकार आकृतियों वाली लाल पैटर्न वाली ओढ़नी पहनती हैं, जबकि नवजात बच्चों वाली माताएं पीले रंग का घूंघट पहनती हैं , जिसे पिलियो कहा जाता है , अगर बच्चा पुरुष है तो लाल डॉट्स के साथ।

मध्य प्रदेश के मालवा क्षेत्र में, मूल रूप से राजस्थान से आए कारीगर पीरिया बनाना जारी रखते हैं , जो राजस्थानी पिलियो, दुल्हन की सुहाग चुनरी और रेनिया लुगड़ा के समान है, जो आमतौर पर जाट , बंजारा और चमार समुदायों की बुजुर्ग महिलाओं द्वारा पहना जाता है ।

बंधनी वस्त्रों, विशेष रूप से साड़ी की वर्तमान लोकप्रियता के कारण इनका व्यापक रूप से निर्माण किया जाने लगा है। हालाँकि, काम की समय लेने वाली प्रकृति के साथ उच्च स्तर के कौशल ने मांग और आपूर्ति में असमानता को जन्म दिया है। इससे मुद्रित नकली बंधनी डिज़ाइनों की वृद्धि हुई है, जिसने टाई-प्रतिरोध रंगाई तकनीकों को प्रभावी ढंग से प्रतिस्थापित करने के बिंदु पर सुंगदी वस्त्रों जैसे विविधताओं पर प्रतिकूल प्रभाव डाला है।

विचार-विमर्श

दुनिया की सबसे पुरानी जीवित टाई एंड डाई (Tie-dye) परंपराओं के रूप में प्रसिद्ध है राजस्थान का बांधनी (Bandhani) और लहरिया (Leheria)। बांधनी (Bandhani) शब्द संस्कृत की क्रिया 'बंध' से निकला है, जिसका अर्थ है "बांधना," और इसमें प्राकृतिक रंगों का प्रयोग किया जाता है। बांधनी (Bandhani) कपड़े पर छोटे-छोटे बिंदुओं को लगातार एक धागे से बांधने और रंगने की खूबसूरत राजस्थानी कला है। समृद्ध कच्छ बेल्ट कई कुशल बंधनी कारीगरों का घर है, क्योंकि यह प्राचीन कला गुजरात और राजस्थान राज्यों से आई है। समय के साथ, जयपुर, जोधपुर और उदयपुर जैसे शहर ऐसे बांधनी की वस्तुओं और विशेष रूप से साड़ियों की बिक्री के लिए प्रमुख व्यावसायिक केंद्र बन गए हैं।

आइये इन राजस्थानी शिल्प रूपों की स्थापना और तकनीक पर एक नज़र डालें जो अपने जीवंत रंगों और शैलीगत पैटर्न के लिए पूरे भारत में प्रसिद्ध हैं।

मुख्य रूप से पश्चिमी भारत (Western India) में प्रचलित इस प्राचीन कला की दिलचस्प बात यह है कि इसके लिए कारीगरों को लंबे नाखूनों की आवश्यकता होती है ताकि कपड़े को अधिक सटीकता के साथ बांधा और रंगा जा सके। इसके लिए तेज़ हाथों की भी आवश्यकता होती है, क्योंकि गाँठ जितनी छोटी होती है उतना ही अधिक समय लगता है। विशेष रूप से, यह कपड़ों के हिस्सों को अलग-अलग तरीकों से बांधकर पैटर्न बनाने की तकनीक हैं।[5,6]

बांधनी (Bandhani) की कला से पगड़ी, दुपट्टे, और साड़ियों के रूप में कुछ उत्पाद सुन्दर और चमकदार बॉर्डर्स के साथ आते हैं जिनपर मिरर वर्क किया जाता है। बंधे-रंगे कपड़ों की एक अन्य श्रेणी जो राजस्थान से बहुत लोकप्रिय हैं, वह लहरिया (Leheria) हैं। शुरुआत में जयपुर में 17वीं सदी के आसपास विकसित किया गया था, लहरिया (Leheria) एक ऐसी तकनीक है जिसमें रंगों के माध्यम से कपड़े पर डायगोनल पैटर्न बनाए जाते हैं। कहा जाता है कि ये लहरदार पैटर्न थार रेगिस्तान के रेत के टीलों से प्रेरित हैं। कुछ लोगों द्वारा यह भी कहा गया है कि राजस्थान के प्रत्येक राजघराने में एक सिग्नेचर लेहरिया पैटर्न और रंग था जिसे केवल

| ISSN: 2395-7639 | www.ijmrsetm.com | Impact Factor: 7.580| A Monthly Double-Blind Peer Reviewed Journal |

| Volume 9, Issue 7, July 2022 |

संबंधित घराने ही सजा सकते थे। जबकि बंधेज और लहरिया राजस्थान के सबसे प्रसिद्ध टाई और डाई प्रिंट हैं, यह रंगाई की तकनीक विभिन्न प्रकार के पैटर्न बना सकती है। इसलिए, कपड़ों पर अलग-अलग मोटिफ जैसे एकदली और शिकारी उपलब्ध हैं। मोथरा को लहरिया का विस्तृत रूप माना जाता है और इसमें डायगोनल रेखाएं विपरीत दिशाओं में एक दूसरे को पार करती हैं, जिससे हीरे के तरह पैटर्न नज़र आते हैं। राजस्थान के सीकर (Sikar) और बीकानेर (Bikaner) में बेहतरीन बंधेज और लहरिया के कपड़े बनाए जाते हैं। बंधेज और लहरिया के अन्य उत्पादन केंद्र जोधपुर, उदयपुर, बाड़मेर और जयपुर हैं। ये टाई एंड डाई तकनीक राजस्थान की जीवंत संस्कृति की सच्ची प्रतिबिंब है, जो राज्य को भारत के अन्य हिस्सों से अलग करती है। इसलिए यदि आप भी अपनी अलमारी में कुछ कलात्मक रूप से रंगे बांधनी और लहरिया के कपड़ों से सजाने चाहते हैं तो राजस्थान के खुले बाज़ारों का दौरा करें जहाँ आपको इस तकनीक की विशाल रेंज मिलेगी और आप इन प्राचीन कलाओं के कारीगरों से भी बात कर सकते हैं।

परिणाम

बंधनी एक प्रकार का टाई-डाई कपड़ा है जिसे नाखूनों से कपड़े को कई छोटे-छोटे बंधनों में बांधकर सजाया जाता है जो एक आलंकारिक डिजाइन बनाते हैं। [1] आज, अधिकांश बंधनी निर्माण केंद्र गुजरात , [2] राजस्थान , [1] सिंध , पंजाब क्षेत्र [3] और तमिलनाडु में स्थित हैं जहां इसे सुंगुडी के नाम से जाना जाता है । पाकिस्तान में इसे चुनरी के नाम से जाना जाता है. [4] [5] बंधनी का सबसे प्रारंभिक साक्ष्य सिंधु घाटी सभ्यता से मिलता है, जहां 4000 ईसा पूर्व रंगाई का काम किया जाता था। सबसे व्यापक प्रकार के बंधनी बिंदुओं का सबसे पहला उदाहरण 6वीं शताब्दी में पाए गए बुद्ध के जीवन को दर्शाने वाले चित्रों में देखा जा सकता है। अजंता की गुफा की दीवार पर। [5] बंधनी को तमिल और क्षेत्रीय बोलियों में बंधेज साड़ी , बंधनी, पिलिया और चुंगिडी के नाम से भी जाना जाता है । बांधने की अन्य तकनीकों में मोथरा, एकडाली और शिकारी शामिल हैं, जो कपड़ा बांधने के तरीके पर निर्भर करता है। अंतिम उत्पादों को खोम्बी, घर चोल, पटोरी और चंद्रोखानी सहित विभिन्न नामों से जाना जाता है।

बंधनी की कला एक अत्यधिक कुशल प्रक्रिया है। इस तकनीक में एक कपड़े को रंगना शामिल है जिसे कई बिंदुओं पर एक धागे से कसकर बांधा जाता है, जिससे चंद्रकला, बावन बाग, शिकारी वगैरह जैसे कई प्रकार के पैटर्न तैयार होते हैं; यह कपड़ा बांधने के तरीके पर निर्भर करता है। बंधना में प्रयुक्त मुख्य रंग पीला, लाल, नीला, हरा और काला हैं। प्रत्येक रंग पारंपरिक रूप से विशिष्ट सांस्कृतिक अर्थ से जुड़ा होता है। लाल विवाह का प्रतीक है और विवाहित महिलाओं के रीति-रिवाजों से जुड़ा है, पीला वसंत का प्रतीक है और मौसम और प्रसव दोनों से जुड़ा है, केसरिया दुनिया के त्याग का रंग है और युद्ध में अपना जीवन देने के लिए तैयार योद्धाओं से जुड़ा है। या जो योगी सांसारिक जीवन त्याग देते हैं, उनके शोक के लिए काले और मैरून रंग का उपयोग किया जाता है। [8]

चूंकि बंधनी एक टाई और डाई प्रक्रिया है, रंगाई हाथ से की जाती है और इसलिए बंधनी में सर्वोत्तम रंग और संयोजन संभव हैं। पारंपरिक रूप से रंगों के स्थायित्व के अनुसार रंगाई के दो प्रकार होते हैं - पक्का, जिसमें रंग आसानी से नहीं उतरते और कच्चा, जिसमें रंग आसानी से फीके पड़ जाते हैं या धुल जाते हैं। ऐतिहासिक रूप से, कच्चा तकनीक अधिक पसंदीदा थी क्योंकि रंगों को बार-बार ताज़ा किया जा सकता था जबकि पक्की तकनीक को बूढ़े लोगों के लिए उपयुक्त माना जाता था।

| ISSN: 2395-7639 | www.ijmrsetm.com | Impact Factor: 7.580| A Monthly Double-Blind Peer Reviewed Journal |

| Volume 9, Issue 7, July 2022 |

बेहतरीन और सबसे जटिल पैटर्न, चाहे पुरुषों की पगड़ी हो या महिलाओं के पर्दे, जिन्हें ओढ़नी कहा जाता है, हमेशा कच्चे रंगों में रंगे जाते थे। [9] बंधना में प्रयुक्त मुख्य रंग प्राकृतिक होते हैं। [9] 19वीं सदी में लिखते हुए टीएच हेंडली ने बंधनी के लिए उपयोग किए जाने वाले रंगों के जैविक स्रोत प्रदान किए, उनमें से अधिकांश जैसे लाल (पक्का और कच्चा दोनों), इंडिगो फूलों से प्राप्त किए गए थे जबकि पीला छाछ के साथ हल्दी मिलाकर बनाया गया था[7,8]

गुजरात में, बंधनी का काम विशेष रूप से कच्छ और सौराष्ट्र के खत्री समुदाय द्वारा किया गया है। एक मीटर लंबे कपड़े में हजारों छोटी-छोटी गांठें हो सकती हैं जिन्हें स्थानीय भाषा ('गुजराती') में 'भिंडी' कहा जाता है। चमकीले रंगों में रंगने के बाद खुलने पर ये गांठें एक डिज़ाइन बनाती हैं। परंपरागत रूप से, अंतिम उत्पादों को 'खोमबी', 'घर चोल', 'चंद्रखानी', 'शिकारी', 'चौकीदार', 'अंबादल' और अन्य श्रेणियों में वर्गीकृत किया जा सकता है।

बांधनी का काम राजस्थान में भी किया जाता है, जहां गुजरात के कच्छ और सौराष्ट्र क्षेत्रों की तुलना में अलग-अलग रंगों और डिज़ाइनों का उपयोग किया जाता है। गुजरात के पूरे कच्छ क्षेत्र में अलग-अलग आकार के प्रतिष्ठान बंधनी की कई किस्मों का उत्पादन करते हैं। इस बांधनी शैली को कच्छी बंधनी कहा जाता है। बांधनी के बोल्ड पैटर्न डिजाइन, रूपांकनों और तकनीक में गुजरात के उत्तरी कच्छ, पश्चिमी राजस्थान और यहां तक कि पाकिस्तान में सिंध के रेगिस्तानी बेल्ट में बहुत समान हैं। [9]

बंधनी बांधना अक्सर एक पारिवारिक व्यवसाय है, और इन परिवारों की महिलाएं घर पर पैटर्न बांधने का काम करती हैं। पेथापुर, मांडवी, भुज, अंजार, जेतपुर, जामनगर, राजकोट, गुजरात के कुछ प्रमुख शहर हैं, जहां बंधनी बनाई गई है। गुजरात का भुज शहर अपनी लाल बंधनी के लिए जाना जाता है। बंधनी की रंगाई प्रक्रिया इस शहर में बड़े पैमाने पर की जाती है, क्योंकि इस क्षेत्र का पानी रंगों, विशेष रूप से लाल और मैरून को एक विशेष चमक देने के लिए जाना जाता है। अन्य भारतीय वस्त्रों की तरह, बंधनी में भी अलग-अलग रंग अलग-अलग अर्थ बताते हैं। लोगों का मानना है कि दुल्हन के लिए लाल रंग शुभ होता है।

बंधनी के शुरुआती साक्ष्य सिंधु घाटी सभ्यता से मिलते हैं, जिससे पता चलता है कि रंगाई 4000 ईसा पूर्व में की गई थी। सबसे व्यापक प्रकार के बंधनी बिंदुओं का सबसे पहला उदाहरण 6 वीं शताब्दी में गुफा की दीवार पर पाए गए बुद्ध के जीवन को दर्शाने वाले चित्रों में देखा जा सकता है। अजंता में. [5] इस कला का उल्लेख भारत के सुंदर मुद्रित सूती कपड़ों के बारे में अलेक्जेंडर द ग्रेट के समय के ग्रंथों में मिलता है। ऐतिहासिक ग्रंथों के साक्ष्य के अनुसार, पहली बंधनी साड़ी बाना भट्ट के हर्षचरित के समय एक शाही विवाह में पहनी गई थी। [10] ऐसा माना जाता था कि बंधनी साड़ी पहनने से दुल्हन का भविष्य अच्छा हो सकता है। अजंता की दीवारें इन बंधनी साड़ियों का प्रमाण हैं। रंगरेजों ने सदियों से प्राकृतिक और मानव निर्मित दोनों तरह के विभिन्न तत्वों के उपयोग का प्रयोग किया है। इसके अलावा, डाई के कंटेनरों में डूबे कपड़े पर पैटर्न बनाने के लिए विभिन्न बंधन/बांधने की तकनीकों के प्रयोग भी किए जा रहे हैं। भारत में विभिन्न प्रकार की टाई और रंगों का प्रचलन रहा है।

बंधेज साड़ी जिसे "बंधानी साड़ी" के नाम से भी जाना जाता है, विशेष रूप से गुजरात और राजस्थान में पाई जाती है । विनिर्माण क्षेत्र के अनुसार बंधेज साड़ी के पैटर्न भिन्न हो सकते हैं। बंधेज की अच्छी किस्में पेठापुर , मांडवी , भुज , अंजार , जामनगर , जेतपुर , पोरबंदर , राजकोट , उदयपुर , जयपुर , अजमेर , बीकानेर , चूरू आदि में बनाई जाती हैं। इन्हें विवाहित महिलाओं की बेशकीमती संपत्ति माना जाता है और ये ज्यादातर पारंपरिक दुल्हन का अनिवार्य हिस्सा हैं। पतलून. राजस्थान और गुजरात में, बंधनी कपड़े पुरुषों और महिलाओं के बीच बहुत लोकप्रिय हैं, लेकिन कई समारोहों के लिए विवाहित महिलाओं के लिए बंधनी साड़ी एक अनुष्ठानिक आवश्यकता है। कई गुजराती दुल्हनें अपनी शादी में घरचोला , एक प्रकार की बंधेज साड़ी पहनती हैं। हालाँकि घरचोला का शाब्दिक अर्थ है "घर के लिए वस्त्र", अनुष्ठान की भाषा में, इसका अर्थ है "नए घर या पति के घर के लिए पोशाक" और आमतौर पर दुल्हन को उसकी सास द्वारा दिया जाने वाला उपहार है। राजस्थान में, गर्भावस्था या प्रसव के दौरान, नेटल होम महिलाओं को छिलके की साड़ी उपहार में देता है। यह चौड़े लाल बॉर्डर के साथ पीले आधार का संयोजन है जिस पर बंधनी पैटर्न है।

बांधनी, टाई-डाईंग की सबसे पुरानी ज्ञात विधियों में से एक है, जो आज भी पश्चिमी भारत में व्यापक रूप से प्रचलित है। कपड़ा कपड़े के बहुत छोटे हिस्सों को चुटकी बजाकर बनाया जाता है और उन्हें नाखूनों से कपड़े को खींचकर कई छोटे-छोटे बंधनों में बांध दिया जाता है, जो डॉट्स का एक जटिल पैटर्न बनाने के लिए एक आलंकारिक डिजाइन बनाते हैं। चमकीले और सुंदर रंग बनाने के लिए कपड़े को अलग-अलग डाई वत्स में रखा जाता है।

निष्कर्ष

बंधनी छोटी गांठों को बांधने और सुंदर पैटर्न बनाने के लिए उन्हें अलग-अलग रंगों में रंगने की एक विधि है। इसे बनाने के लिए आमतौर पर नाखूनों से बांधा जाता था । लेकिन राजस्थान के कुछ स्थानों में कारीगर कपड़े को आसानी से तोड़ने के लिए नुकीली कील वाली धातु की अंगूठी पहनते हैं ।

| ISSN: 2395-7639 | www.ijmrsetm.com | Impact Factor: 7.580| A Monthly Double-Blind Peer Reviewed Journal |

| Volume 9, Issue 7, July 2022 |

बंधनी कपड़ा बनाने की प्रक्रिया बहुत कठिन नहीं है, लेकिन इसमें बहुत समय लगता है। बंधनी साड़ी और दुपट्टे बनाने के लिए इस्तेमाल किया जाने वाला कपड़ा ढीला बुना हुआ रेशम होता है जिसे जॉर्जेट कहा जाता है , या कपास जिसे मलमल के नाम से जाना जाता है । गांठें कसकर बांधी जाती हैं और बाकी कपड़े को कई चरणों में रंगा जाता है । इससे गांठें खुल जाती हैं और पूरे कपड़े पर एक सुंदर फूल जैसा पैटर्न डिज़ाइन के रूप में दिखाई देता है ।[9]

मुलमुल (महीन मलमल), हथकरघा या रेशमी कपड़ा पारंपरिक विकल्प थे लेकिन अब शिफॉन, जॉर्जेट और क्रेप का उपयोग भी बंधनी के लिए आधार कपड़े के रूप में किया जा रहा है। स्टार्च के निशान हटाने के लिए इस कपड़े को धोया जाता है, और फिर एक स्पष्ट आधार प्राप्त करने के लिए ब्लीच किया जाता है। फिर इसे कपड़े की मोटाई के आधार पर दो या चार परतों में मोड़ा जाता है। एक डिजाइनर पानी के साथ मिश्रित प्राकृतिक मिट्टी के रंग गेरू में डूबे लकड़ी के ब्लॉकों का उपयोग करके सामग्री पर पैटर्न के लेआउट को चिह्नित करता है । जिन क्षेत्रों को रंगना नहीं है वहां से कपड़ा बांधा जाता है। इस प्रक्रिया के लिए कलाकार की ओर से धैर्य, विशेषज्ञता और सावधानी की आवश्यकता होती है। छोटे रूपांकन के भीतर सामग्री की परतों को उठाकर एक साथ बांधना होगा। संबंधों के पहले सेट वाली सामग्री को पीले रंग से रंगा गया है। सामग्री को फिर से बांधा जाता है और लाल या हरे रंग में रंगा जाता है। कलाकार हल्के से गहरे रंगों की ओर बढ़ता है और अधिक तथा विविध रंगों का उपयोग प्रक्रिया को जटिल बना देता है। यदि बॉर्डर को गहरा करना है तो सभी हल्के हिस्सों को बांध दिया जाता है और प्लास्टिक की पन्नी से ढक दिया जाता है और किनारों को आवश्यक रंगों से रंग दिया जाता है। बार-बार बांधने और रंगने से विस्तृत डिज़ाइन तैयार होते हैं। डिज़ाइन एक एकल रूपांकन या किसी क्रम में बारी-बारी से बड़े और छोटे रूपांकनों के संयोजन में चल सकते हैं।[10]

संदर्भ

1. जी.के. घोष, शुक्ला घोष (1 जनवरी 2000)।"3"।इकत टेक्सटाइल्स ऑफ इंडिया। एपीएच प्रकाशन (प्रकाशित 2000)।आईएसबीएन 978-8170247067. 28 मार्च 2017 को लिया गया .
2. ^ किंग, ब्रेंडा एम. (3 सितंबर 2005)। रेशम और साम्राज्य . मैनचेस्टर यूनिवर्सिटी प्रेस (2005 में प्रकाशित)। पी। 59. आईएसबीएन 978-0719067013. 19 मार्च 2017 को लिया गया ।
3. ^ फ़ेलिशिया याकोपिनो (1977) थ्रेडलाइन्स पाकिस्तान
4. ^ नसरीन अस्करी, लिज़ आर्थर, पैस्ले संग्रहालय और आर्ट गैलरी मेरेल होल्बर्टन, (1999) अनकट क्लॉथ [1]
5. ^ [सी] वाडा, योशिको इवामोटो (2002)। कपड़े पर स्मृति: शिबोरी नाउ । कोडनशा इंटरनेशनल। पी। 28.आईएसबीएन 9784770027771.
6. ^ मोनियर-विलियम्स संस्कृत-अंग्रेजी शब्दकोश 1899 । वाडा, योशिको इवामोटो (2002)। कपड़े पर स्मृति: शिबोरी नाउ । कोडनशा इंटरनेशनल। पी। 28. आईएसबीएन 9784770027771.
7. ^ गुजरात राज्य गजेटियर्स: जूनागढ़ (1971)
8. ^ गिल्लो, जॉन; बरनार्ड, निकोलस (2008)। भारतीय कपड़ा . टेम्स और हडसन। आईएसबीएन 978-0-500-51432-0.
9. ^ [डी] मर्फी, वेरोनिका; क्रिल, रोज़मेरी (1991)। भारत के टाई-डाई वस्त्र: परंपरा और व्यापार । विक्टोरिया और अल्बर्ट संग्रहालय.आईएसबीएन 978-0-8478-1162-5.
10. ^ अग्रवाल, वी.एस. (1959)। "बाना के हर्षचरित में वस्त्रों का संदर्भ" । जर्नल ऑफ इंडियन टेक्सटाइल हिस्ट्री । IV : 65-68 - GlobalInCH के माध्यम से।

Impact Factor: 7.580

INTERNATIONAL JOURNAL
OF MULTIDISCIPLINARY RESEARCH
IN SCIENCE, ENGINEERING, TECHNOLOGY AND MANAGEMENT

+91 99405 72462 +91 63819 07438 ijmrsetm@gmail.com